History of Wildlife in Mewar

(Southern Rajasthan, India)

From Early Stages of Life in Precambrian Era to Recent History

Sunil Dubey Ph.D.

Member IUCN World Commissions (CEM, WCPA, CEESP, CEC);

Former Lecturer of Environmental Science

Joint Managing Trustee, Institute for Ecology and Livelihood Action (IELA)

Raza H. Tehsin Ph.D.

Former member Rajasthan State Wildlife Board,

Former Hony. Wildlife Warden Udaipur

Honorary Lifetime Advisor of IELA

Historical / Ancient Aravali Mountain Range as Determinant of Ecological Features and Distribution & Occurrence of Wildlife

Drude Line

by Oscar Georg Drude 1890- 1913

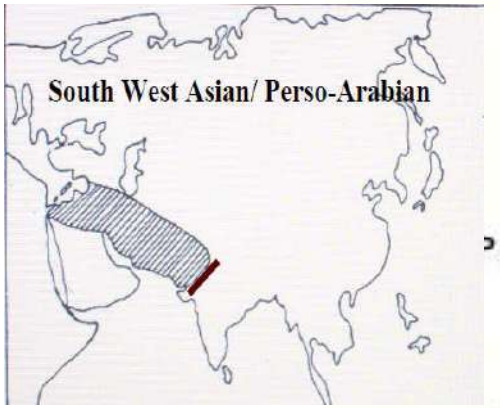

Western Side: Arid Zone / Desert

Eastern Side: Dry-Deciduous Forest

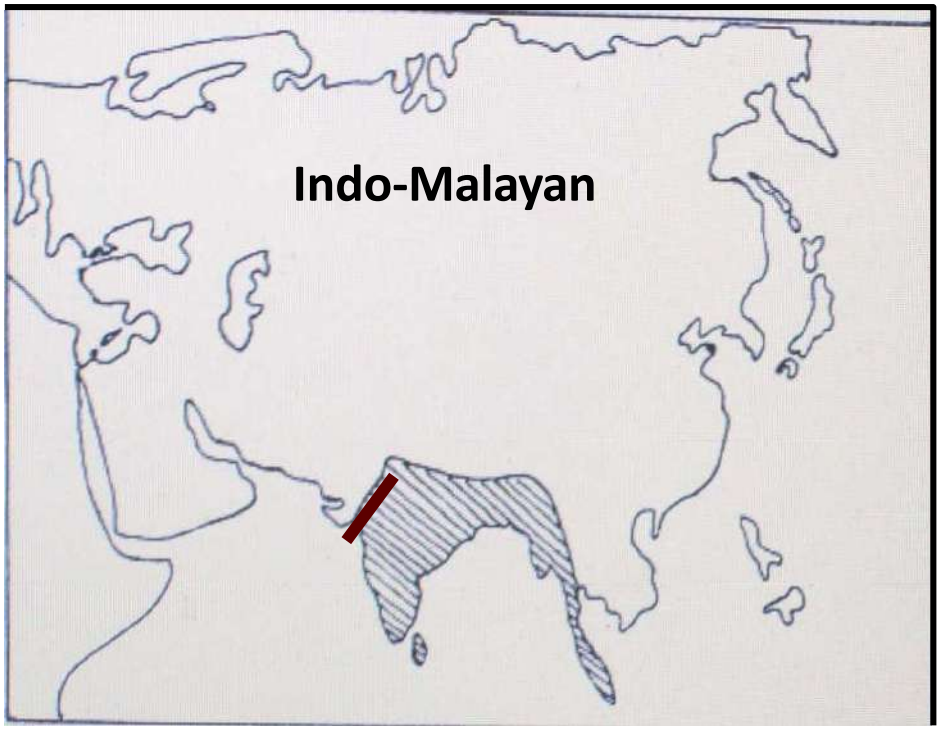

Great Aravallis : Drude's Line

- Drude (1890,1913) stated - the line limiting **Perso-Arabian** and **Indo-Malayan** elements runs along the Aravallis and extends southwards to the Gulf of Cambay.

The Aravalli mountains play an important role as an Ecotone of eastern and western elements, as well as a barrier in keeping these densely forested areas from spreading to the western desert. Therefore directly affecting the natural habitats, ecosystems & their biodiversity, species distribution & interaction.

Stromatolites – Evidences of Blue-green Algae and Bacteria Communities exisiting ~ 1800 million years ago

- **Stromatolite Fossil Rock** (locally called 'Magarmachh Bhata i.e. crocodile rocks, resembling in texture like crocodile's skin).
- **Blue-green algal** assemblages and **bacteria** preying upon them bound together while performing life activity were trapped in sediment deposits in shallow marine basin, resulted into mound-shaped mats of microorganisms and got fossilized. Fossils of those mats are called **stromatolites.**
- **Evidence of early evolutionary stages of life (Algae and Bacteria & their interactions) of life in (today's) Mewar region during Precambrian era (~ 1800 million years ago)**

Stromatolites – Evidences of Evolutionary Stages of Life (~ 1800 million years ago) between Aravali – Vindhya Formations

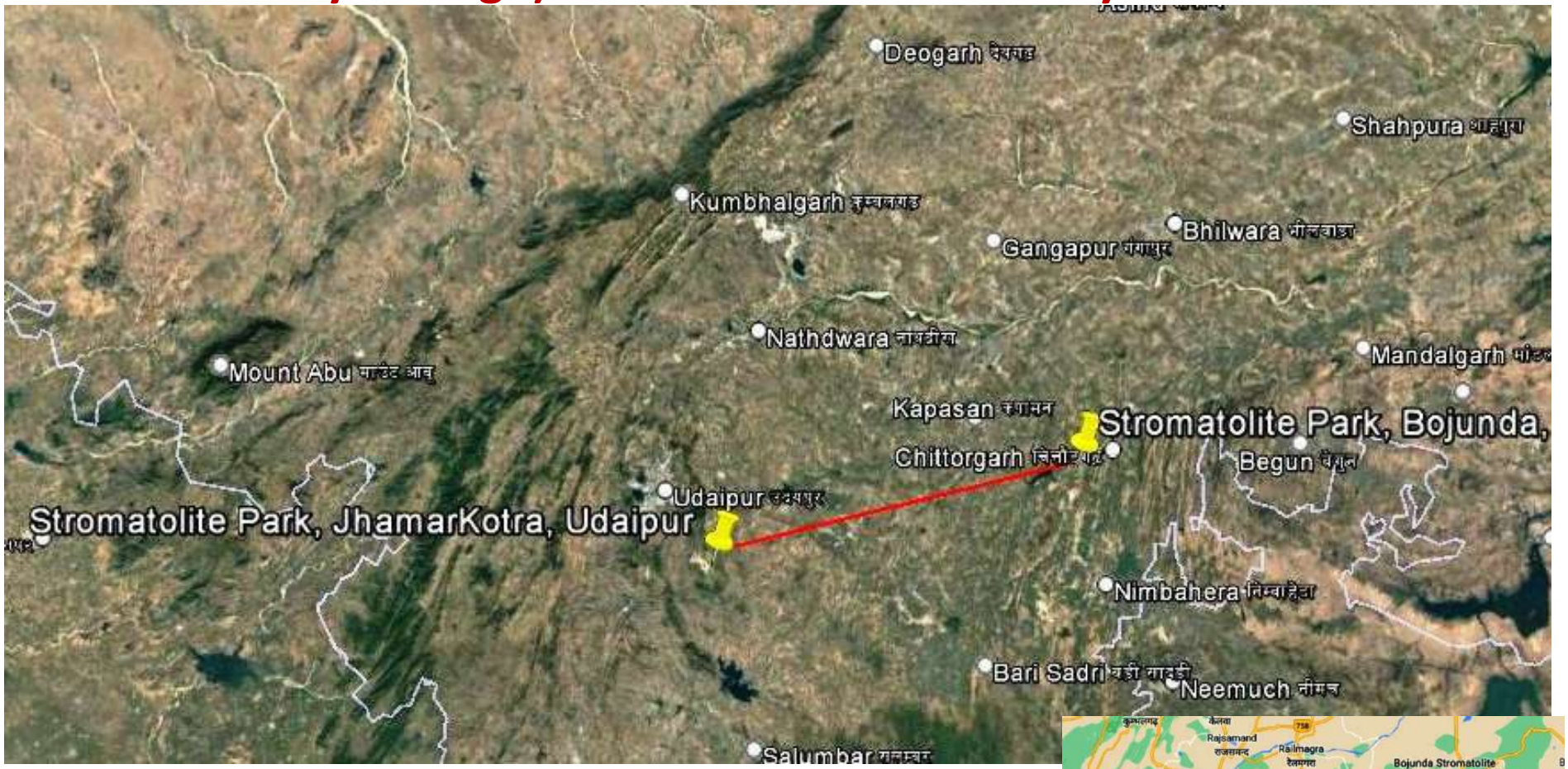

- Jhamarkotra and Bojunda stromatolites site were discovered during 1970s and were declared National Geological Monument in 1976 (INTACH, 2016).
- **Both sites are listed among the 34 Geo Heritage / National Geological Monument sites of India.**

Snow Trout – First Live Biological Evidence of Connection with Himalayan Cold Water with Subterranean Rivers/Streams in Mewar

- Schizothoracine Fish (Snow Trout) inhabit hilly streams and lakes in the Himalayan and sub-Himalayan region extending to China.
- Discovered in 1987 by Dr. Raza H. Tehsin in a subterranean water channel in a cave in the Aravalis (Matoon Mines) near Udaipur.
- **First live biological evidence** of centauries old connection with rivers that of Himalayan cold-water stream or river tributary that would have flowed through the Indus–Yamuna interflow, possibly very close to the Aravali hill ranges. (10000 to 8000 yrs Before Present ??)

Photo credit: Dr. Raza Tehsin

सरस्वती कभी उदयपुर में सहायक नदी के रूप में बहती रही

[illegible]

25-12-98 दैनिक नवज्योति

मेवाड़ में भी सरस्वती नदी के अस्तित्व का प्रमाण!

दैनिक भास्कर 25-12-98

उदयपुर, 24 दिसंबर (विसं)। मेवाड़ से भी सरस्वती नदी गुजरती होगी। इस संकल्पना का पहला जैविक प्रमाण यहां उदयपुर क्षेत्र में मिली रिचर्डसोनी प्रजाति की मछली से मिलता है।

पक्षीविद् एवं बुरहानी फाउंडेशन के सदस्य रजा तहसीन ने बताया कि रिचर्डसोनी मछली प्रायः हिमालय के निकट तेज बहने वाली ठंडी नदियों में पाई जाती है और यही मछली पिछले दिनों मटून खदान के पास गुफाओं के पास मिली है। उनका कहना है कि इसके पाए जाने पर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि हिमालय से मेवाड़ तक कोई लंबी सुरंग होगी, किंतु भूगर्भ शास्त्री इसका खंडन करते हैं। रजा तहसीन का कहना है कि मेवाड़ का पानी, जो पश्चिम की तरफ बहता है, वह सरस्वती नदी की किसी शाखा से अवश्य मिलता होगा। ऐसे प्रमाण उपग्रह से प्राप्त चित्रों से भी मिलते हैं। तहसीन ने बताया कि इस मछली के गुणधर्मों में मामूली अंतर है, जो संभवतया बार-बार प्रजनन के कारण हो सकता है।

ODD FISH FOUND IN MEWAR WATERS

May-2-1987

UDAIPUR, May 1.—A fish found recently near here sheds light on the geographical past of the Mewar region, according to Mr Raza Tehsin, member of the Wildlife Advisory Board of the Rajasthan Government, reports UNI.

Mr Raza, with Mr Manoj Kulshreshtha of the World Wildlife Fund-India, discovered the fish in cave water.

Dr V. S. Durve of MLS University here identified the fish as "schizothorax richardsoni" which is found in the fast-flowing cold streams of the sub-Himalayan region. he species inhabit purely subterranean environment and ... in

राजस्थान पत्रिका - उदयपुर - मई 5-1987

बाघदड़ा के निकट एक गुफा से मिली स्नोट्राउट मछली।

बाघदड़ा में स्नोट्रउट मछली मिली

(कार्यालय संवाददाता)

उदयपुर, 4 मई। जिले के बाघदड़ा तालाब के निकट एक गुफा में भूतल से करीब 60 फुट नीचे एकत्र जल में हाल ही एक नई किस्म की मछली खोजी गई है।

इस मछली की खोज राजस्थान वन्यजीव सलाहकार मण्डल के सदस्य रजा तहसीन और मनोज कुलश्रेष्ठ ने यह खोज की है। इस मछली के बारे में सुखाड़िया विश्वविद्यालय में मत्स्य विभाग के प्रोफेसर डा. ए.एस. दुरवे की राय है कि 'स्नोट्राउट' किस्म की ऐसी मछलियां हिमालय के ठंडे क्षेत्र में तेज बहाव वाले पानी में पाई जाती हैं। इसका प्राणी शास्त्रीय नाम साईजोथोरेक्स रिचरडसोनी है। यहां इस मछली ने अपने आपको नई परिस्थितियों में ढाला है, जिससे इसकी शारीरिक संरचना में भी कुछ बदलाव आया है।

The Times of India
May-2nd 1987

Fish find throws new light on past of Mewar

UDAIPUR, May 1 (UNI). A fish found recently near here throws new light on the geographical past of the Mewar region, according to Mr. Raza Tehsin, member of the Wildlife Advisory Board of the Rajasthan Government.

Mr. Raza, along with Mr. Manoj Kulshreshtha of the World Wildlife Fund-India, discovered the fish in cave water 10 feet deep while working on an environmental plan.

Dr. V.S. Durve of the MLS university here identified the fish as "schizothorax richardsoni", which is found in the fast flowing cold streams of the sub-Himalayan region, including Bhutan, Nepal and Pakistan. This species inhabits purely subterranean environment and has never before been found in a different environment.

Mr. Raza and his team are now trying to find more evidence in the fauna of the region which will give a new dimension to the study of the region's antecedents.

हिन्दुस्तान

नई दिल्ली, शुक्रवार, 25 दिसम्बर, 1998 (11)

सरस्वती के थार मरुस्थल तक बहने के प्रमाण

वार्ता

उदयपुर, 24 दिसम्बर। वैज्ञानिकों को इस बात के और प्रमाण मिले हैं कि पौराणिक सरस्वती नदी थार मरुस्थल तक बहती थी और इसकी एक सहायक नदी राजस्थान के उदयपुर तक बहती थी।

प्रमुख पर्यावरणविद एवं बम्बई नेचुरलिस्ट सोसाइटी के सदस्य डॉ. रजा तहसीन ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इसका पता इस क्षेत्र में पायी गयी स्नोट्राउट मछली से मिलता है।

उन्होंने बताया कि हिमालय की तेज धार वाले ठण्डे पानी के स्रोतों में पायी जाने वाली 'स्नो ट्राउट' मछली उदयपुर के समीप स्थित हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की मटुन माइंस की एक गुफा में ठण्डे पानी के स्रोत में मिली है।

डॉ. तहसीन ने बताया कि सरस्वती नदी पौराणिक काल में थार मरुस्थल से गुजरती थी इसकी खोज में वैज्ञानिक वर्षों से लगे हुए हैं। प्रारंभ में कुछ भू. वैज्ञानिकों ने जीवाश्मों के आधार पर यह राय जाहिर की थी जिसके पश्चात उपग्रहों द्वारा लिये गये चित्रों से यह स्पष्ट होने लगा कि यह नदी आज भी शायद भूमिगत रूप से मौजूद है। वैज्ञानिकों की एक टीम इसकी खोज में जुटी हुई है।

डॉ. रजा तहसीन ने बताया कि पर्यावरणीय सर्वे के तहत उन्होंने 1987 में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की मटुन माइंस का सर्वेक्षण किया था। पानी की कमी एवं अन्य कारणों से यह इकाई उस समय बंद पड़ी थी। अयस्क धातु 'रॉक फास्फेट' के उत्पादन के लिये प्रसिद्ध इस इकाई के संचालन की दृष्टि से किये गये पर्यावरणीय सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि माइंस के अहाते में कुछ गुफाएं भी मौजूद हैं। उन्होंने बताया कि भू-वैज्ञानिकों का मानना था कि ये गुफाएं मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा सभ्यता के समय से ही मौजूद हैं।

उन्होंने बताया कि पर्यावरणीय सर्वेक्षण के दौरान वह मटुन माइंस में स्थित गुफाओं में से एक गुफा में उतर गये थे। वह जमीन से लगभग 60 फीट से अधिक गहराई में जब वहां पहुंचे तो अंधेरे के कारण उन्हें कुछ नजर तो नहीं आया और उन्होंने पत्थर फैंक कर वहां पानी होने की संभावना व्यक्त की थी।

डॉ. तहसीन ने बताया कि उन्होंने माइंस के अभियन्ताओं से संपर्क कर गुफा में पानी होने की जानकारी दी थी और इसके साथ ही अभियन्ताओं से आग्रह किया था कि पानी के साथ यदि कोई मछली मिले तो उन्हें सूचित किया

सरस्वती की सहायक नदी उदयपुर तक बहती थी

जाये। लेकिन माइंस के अभियन्ताओं ने पानी पंप करते समय इसका ध्यान नहीं रखा और वहां से निकलने वाली अधिकांश मछलियों का भक्षण कर लिया गया।

डा. तहसीन ने बताया कि मटुन माइंस में पानी का अथाह स्रोत मिल जाने से बंद पड़ी इकाई फिर से काम करने लग गयी। इस दौरान गुफा से निकली एक मछली को सुरक्षित कर लिया गया था। उन्होंने बताया कि गुफा से पायी गयी इस मछली के बारे में खोज करने पर इसके जीन्स पहचान कर ली गयी जिससे पता चला यह हिमालय के ठंडे पानी के स्रोतों में पायी जाने वाली 'स्नोट्राउट' नामक मछली है।

उन्होंने बताया कि भूवैज्ञानिक विशेषज्ञों के अनुसार इस संभावना को बल मिला है कि सरस्वती नदी राजस्थान के थार मरुस्थल से निकलती होगी और उसी समय यह मछली पानी के बहाव के साथ यहां आई होगी।

उन्होंने बताया कि सर्वेक्षण के दौरान इस बात की भी संभावना उभर कर आई कि जब भूगोलीय पृथक्करण हुआ तब इन मछलियों को ठण्डा पानी नहीं मिला और गुफाओं में जहां सतह की तुलना में पानी ज्यादा ठण्डा होता है, इन मछलियों ने रहना शुरू कर दिया।

उन्होंने संभावना जताई कि एक छोटे स्थान पर हजारों वर्षों से रहने इनब्रीडिंग के कारण इनमें से कुछ में मोरफोलोजिकल बदलाव आ गया। इसी कारण इस मछली की पहचान जीन्स से ही हो पायी।

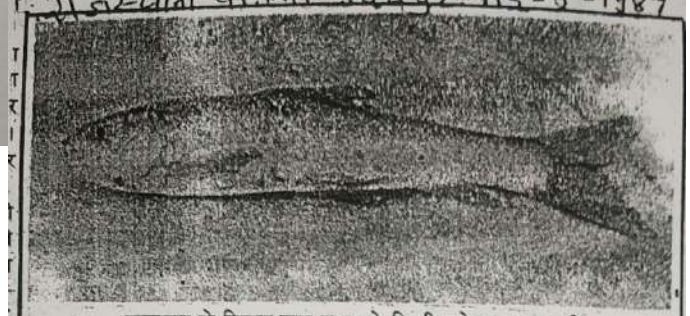

डा. तहसीन ने बताया कि पर्यावरणीय सर्वेक्षण के दौरान भूवैज्ञानिक विशेषज्ञों एवं पर्यावरणविदों से मिले निष्कर्षों को पुष्ट करने वाला यह पहला और पक्का जैविक प्रमाण है कि किसी समय में सरस्वती नदी राजस्थान से होकर बहती थी। उदयपुर के आसपास का पानी जो कि आज उत्तर की ओर बहता है पश्चिम की ओर बहता होगा और सरस्वती में एक सहायक नदी [illegible]

सरस्वती की सहायक नदी उदयपुर तक आती थी

राजस्थान पत्रिका 25-12-98

[कार्यालय संवाददाता]

उदयपुर, 24 दिसम्बर। वैज्ञानिकों को इस बात के और प्रमाण मिले हैं कि पौराणिक सरस्वती नदी थार मरूस्थल तक बहती थी और इसकी एक सहायक नदी राजस्थान के उदयपुर तक बहती थी। प्रमुख पर्यावरणविद एवं बॉम्बे नेचुरलिस्ट सोसाइटी के सदस्य डॉ. रजा तहसीन ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इसका पता इस क्षेत्र में पाई गई स्नोट्राउट मछली से मिलता है। उन्होंने बताया कि हिमालय की तेज धार वाले ठण्डे पानी के स्त्रोतों मे पाई जाने वाली स्नोट्राउट मछली उदयपुर के समीप स्थित हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की मटुन माइंस की एक गुफा में ठण्डे पानी के स्त्रोत मे मिली है। डॉ. तहसीन ने बताया कि सरस्वती नदी पौराणिक काल में थार मरूस्थल से गुजरती थी। इसकी खोज में वैज्ञानिक वर्षों से लगे हुए हैं। प्रारंभ में कुछ भू वैज्ञानिकों ने जीवाश्मों के आधार पर यह राय जाहिर की थी जिसके पश्चात उपग्रहों द्वारा लिए गए चित्रों से यह स्पष्ट होने लगा कि यह नदी आज भी शायद भूमिगत रूप से मौजूद है। वैज्ञानिकों की एक टीम इसकी खोज में जुटी हुई है। डॉ. रजा तहसीन ने बताया कि पर्यावरणीय सर्वे के तहत उन्होंने 1987 में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की मटुन माइंस का सर्वेक्षण किया था। पानी की कमी एवं अन्य कारणों से यह इकाई उस समय बंद पड़ी थी। अयस्क धातु राक फास्फेट के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध इस इकाई के संचालन की दृष्टि से किए गए पर्यावरणीय सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि माइन्स के अहाते मे कुछ गुफाएं भी मौजूद है। उन्होंने बताया कि भू-वैज्ञानिकों का मानना था कि ये गुफाएं मोहनजोदड़ो एवं हडप्पा सभ्यता के समय से ही मौजूद है। उन्होंने बताया कि पर्यावरणीय सर्वेक्षण के दौरान वह मटुन माइंस में स्थित गुफाओं में से एक गुफा में उतर गए थे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

Ahar Civilization – Evidences of Fauna Existing in Mewar Region from Copper Age to Iron Age

- Ahar Civilization dating back to 2000 BC.
- First Excavation started in 1950s, then comprehensively excavated in 1961-62.
- **Terracotta toys, horns and antlers excavated from the Ahar Riverside are indicators of the faunal species existed that time.**
- Inference about the natural habitat based upon faunal evidences is that the area had hilly and ravine forest with dense undergrowth, consisting of vast stretches of grassland and marshy land.

Bangles made of Shell

Bone Points

Beads made of terracotta and Shell

Terracotta Figurine

Girwa Valley and Ahad River Provided Dense Forests, Grasslands, Ravine Forest and Marshy Habitat

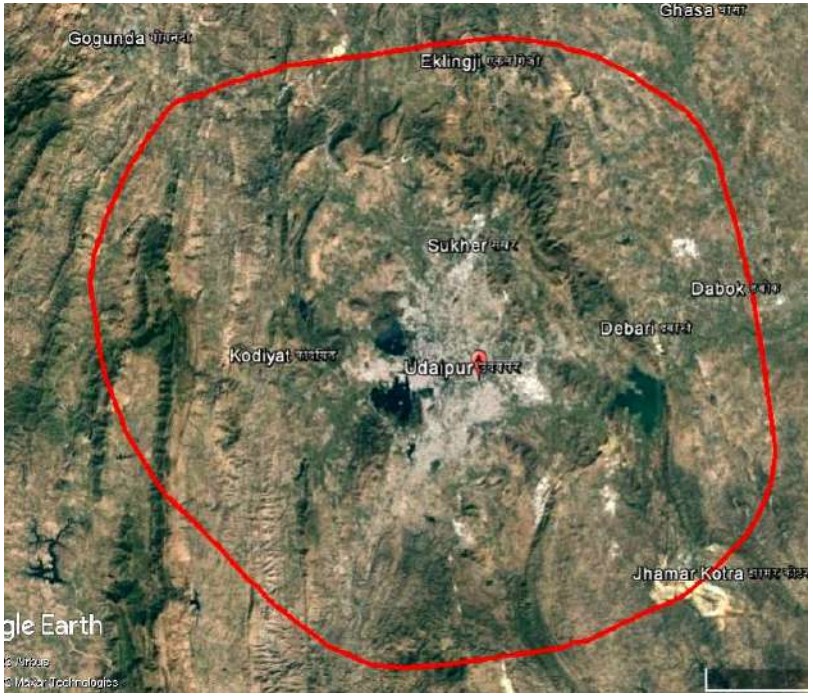

- Tehsin (2004) ascertained following animal genera/species –

1. **Elephant**
2. **Rhinoceros**
3. **Indian Wolf**
4. **Black Buck**
5. **Boar**
6. **Gaur/Bison (Indicator of bamboo dominated dry-deciduous forest)**
7. **Barasingha/Swamp Deer (Indicator of swampy conditions and grasslands)**
8. **Mongoose**
9. **Parakeet**
10. **Wild Fowl** (? Coincides with distribution of Swamp Deer). * Grey jungle Fowl and Red Jungle Fowl are still found in Mewar region.

11.Fish (Bony Fish)

Domestic species included - Domestic Ass, Cattle (Cow & Bull), Goat, Sheep, Dog and Fowl (poultry).

Faunal Records in the History of Mewar Dynasty

(Jaisamand Wildlife Sanctuary and Nearby Areas)

- Prior to independence, the Jaisamand area was managed by the erstwhile rulers of Mewar, they used it as a ‘Shikargah’ (hunting ground).
- The area at that time was immensely rich in faunal wealth and tiger was the apex species.

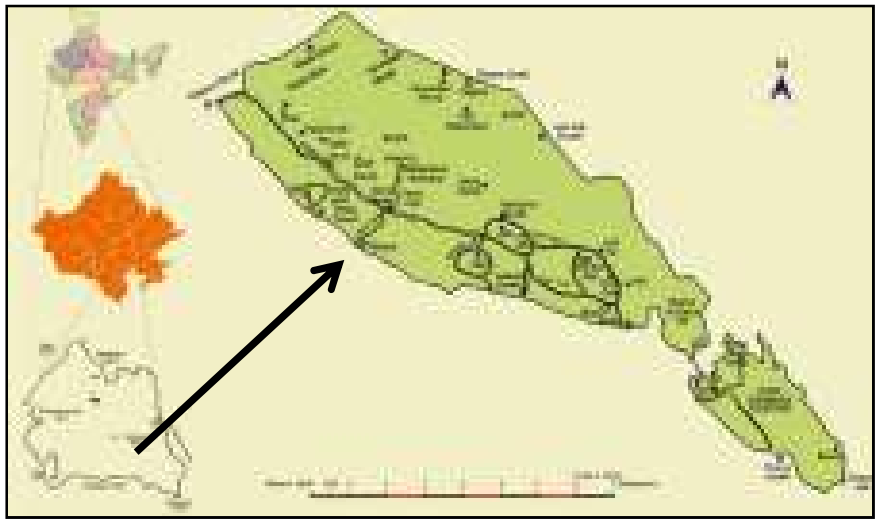

- Historical evidences of Jaisamand being rulers’ choice for hunting are palaces (for stay), hunting enclosures, large number of shooting boxes (Odhis) at advantage points, still there.

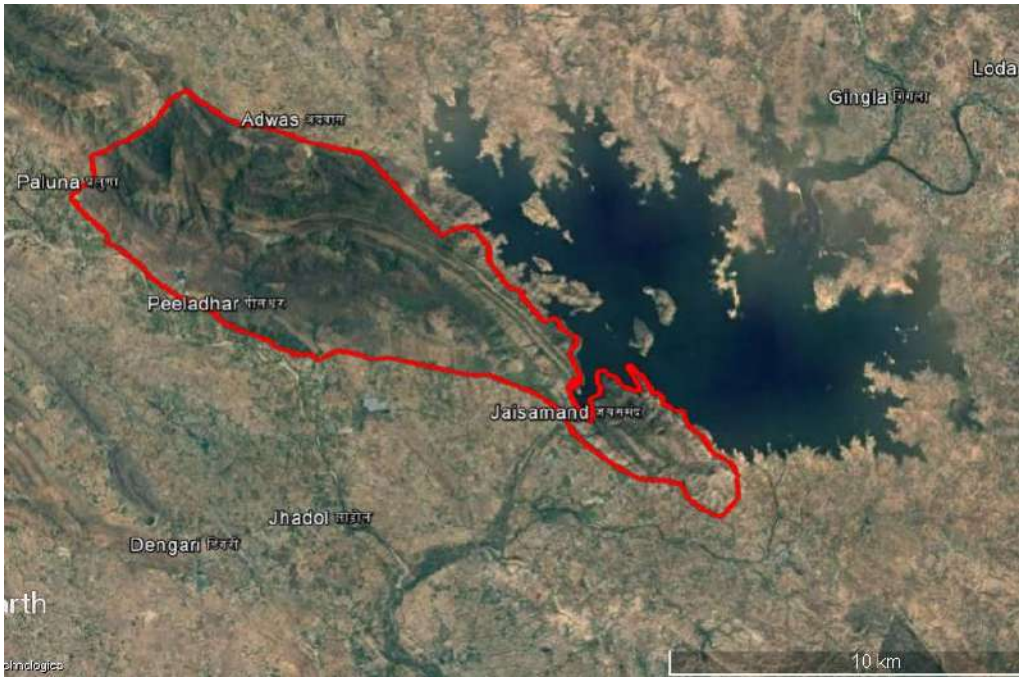

Historical Descriptions Written at the Time of Mewar Dynasty that Include Record of Wildlife of the Region –

- **'Veer Vinod'** written by Shyamal Das Ojha (1886).
- **'Udaipur Rajya Ka Itihaas'** written by Gaurishankar Heerachand Ojha (1928).

Wild animals mentioned –

Carnivores - Tiger, Lion, Cheetah, Leopard, Wolf, Wild Dog, Caracal, Hyena, Jackal.

Herbivores - Bear, Sambhar, Four-horned antelope, Black Buck, Chinkara, Cheetal, Wild Boar, Blue bull, Hanuman Langur. Elephant (introduced).

Birds – Vultures, Eagle, Kite, shikra, Crow, Alexandrine Parakeet & other Parakeets, Pigeon, Jungle Fowl, Koel, Cuckoo, Partridge, Quail, Green Pigeon, Egrets, Sarus Crane, Lapwing, Swan, Ducks, Water Fowl, Cormorants etc.

Aquatic Animals - Crocodile, Otter, Frogs, Turtle, Crabes, Water Snake (Dindu), Goonch Fish (Giant Devil Catfish) and other varieties of fishes.

Historical Descriptions Written at the Time of Mewar Dynasty that Include Record of Wildlife of the Region –

- **'The Indian Field shikaar Book'** written by Burke (1928)

  Wild animals mentioned – Lion, Cheetah.

- **'Shikari Aur Shikar'** written by Dhaybhai Tulsinath Singh Tanwar (1956).

  Wild animals mentioned –

  - Tiger (Sher)
  - Leopard (Panther, Adhbesra)
  - Bear (Bhaloo)
  - Wolf (Varagda)
  - Wild Dog (Karu)
  - Wild Boar (Suar)
  - Sambhar Deer
  - Cheetal (Spotted Deer)
  - Bluebull (Neelgai)
  - Black Buck (Kala Hiran)
  - Chinkara (Chhinkla Hiran)
  - Porcupine (Sehi/Heli)
  - Hare (Khargosh)
  - Four-horned antelope (Bhedal, Butar)
  - Flying Squirrel (Udni Billi)
  - Crocodile, Otter, Fishes (Mahseer, Sanwal, Rohu, Lanchi, Goonch)
  - Gangetic Dolphin (!)
  - Birds (Partridge, Quail, Green Pigeon, Jungle Fowl, Water Hen.

  Migratory birds (Ducks, Bar-headed Geese, Bustard, Demoiselle Crane etc).

श्रीमान स्व० महाराणा साहब भूपालसिंह जी बहादुर

श्रीमान महाराणा साहब श्री भगवतसिंह जी बहादुर

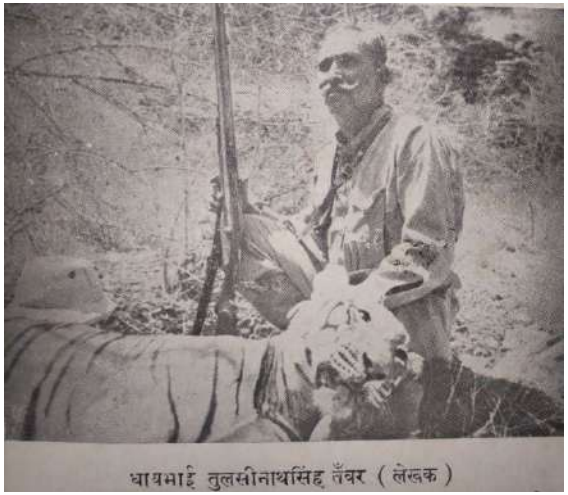

धायभाई तुलसीनाथसिंह तँवर (लेखक)

Dhaybhai Tulsinath Singh Tanwar had served three generations of Maharana of Mewar, Maharana Fateh Singh, Maharana Bhupal Singh and Maharana Bhagwat Singh and accompanied them in hunting expeditions in landscapes of Mewar and other districts of S. Rajasthan.

- **The District Gazetteer of Udaipur** (Agarwal, 1979) also has description of floral and faunal diversity of Udaipur including that of Jaisamand wildlife sanctuary.
- **Dr. Raza Tehsin** (1980, 1986, 1987) has described historical record and ooccurrence of Large Brown Flying Squirrel, Mouse Deer, Wild Dogs and Wolf in Mewar region.

हाथी भी विचरण करते थे मेवाड़ के जंगलों में

जंगल सिमटने से कई वन्यजीव विलुप्त

उदयपुर, 3 अप्रैल (नसं)। हाथी सघन जंगल में ही विचरण करते हैं और 21 वीं सदी में मेवाड़ के जंगल इतने सघन थे कि यहां उन्मुक्त रूप से हाथी विचरण करते थे। चीता, जंगली कुत्ते, काला हरिण, ऊदबिलाव जैसे वन्यजीव एवं राज्यपक्षी गोडावण, हरियल एव पटावल भी विलुप्त पक्षियों की प्रजाति में शामिल हैं।

वर्ष 1905 में प्रकाशित इंडिया-ब्रिटिश इंडिया गजट में मेवाड़ के जंगलों में हाथियों की की जानकारी दी गई हैं। ब्रिटिश सरकार ने 21 वीं सदी के प्रथम में हाथियों के बारे में संसार भर में सर्वे किया, जिसमें भी यह उल्लेखित है कि यहां हाथी पाए जाते थे। इंडिया-ब्रिटिश गजट के अनुसार फुलवारी की नाल में हाथी पाए जाते थे। उस समय हाथियों की संख्या भी तीन दर्जन से अधिक थी। राज्यपक्षी गोडावण अंतिम बार 1953 में डबोक के समीप नाहरमगरा में देखे गए। इससे पूर्व इस क्षेत्र में सैंकड़ों की तादाद में गोडावण सैंकड़ों की तादाद में पाए जाते थे। पिछली सदी के छठे दशक में प्रतापगढ़ में अंतिम बार गोडावण देखा गया।

21 वीं सदी के चौथे दशक तक मेवाड़ के जंगलों में चीता भी पाया जाता था। चित्तौड़गढ़ जिले के प्रतापगढ़ के जंगलों में इसे अंतिम वार देखा गया। बाघों की संख्या के मामले में मेवाड़ के जंगल अव्वल हुआ करते थे। लगातार शिकार के कारण बाघ खतम हो गए। वर्ष 1967 में अंतिम बाघ का भी शिकार कर दिया। हालांकि, तीन साल पहले डूंगरपुर जिले में एक बाघ दिखाई पड़ा जो मध्यप्रदेश के जंगल से भटक कर यहां आ गया था जिसे ग्रामीणों ने घेर कर मार डाला। शिकारी कुत्ते मेवाड़ के जंगलों में पाए जाते थे, लेकिन 1962 के बाद वे लुप्त हो गए। उस वर्ष गोगुंदा क्षेत्र के जंगल में दो शिकारी कुत्ते दिखाई पड़े। पांचवें दशक में यहां प्रतापनगर तक चिंकारा एवं हरिण झुंडों के रूप में देखे गए। बस्ती बढ़ने एवं जंगल के सिमटने से चिंकारा मेवाड़ से घटने लगे। यह संख्या घटकर अब 342 रह गई।

मानद वन संरक्षक एवं ख्यातनाम पशुविद् एवं पक्षीविद् रजा तहसीन बताते हैं कि मेवाड़ के जंगल वन्यजीवों के लिए सबसे सुरक्षित स्थान हुआ करते थे। यहां काला हरिण, भालू, चौसिंगा, जंगली कुत्ता, चिंकारा, लोमड़ी, अजगर, हरियल, पटावल, मगर एवं उदबिलाव आदि हजारों की तादाद में पाए जाते थे, लेकिन कुछ वन्यजीव अब लुप्त हो गए तो कुछ खतम होने की कगार पर हैं। वन्यजीवों के व्यापारिक शिकार के कारण यह स्थिति पैदा हुई। बनास नदी के बरवड़ (टैंक) में एक साथ चालीस-पचास हजार मगर पाए जाते थे जो अब दिखाई नहीं पड़ते। बाघदड़ा को छोड़ दिया जाए तो इक्का-दुक्का मगर झीलों में रह गए। बनास एवं मेवाड़ की कई नदियों में रजा ने एक साथ सैंकड़ों की तादाद में उदबिलाव देखे थे। यहां सहेलियों की बाड़ी में अजगरों की भारी तादाद थी और पंद्रह-बीस फीट लंबे अजगरों का मिलना सामान्य माना जाता। अब जो अजगर मिलते वे उस प्रजाति के नहीं और न ही उतने लंबे। 21 वीं सदी के पांचवे दशक में पटावल पक्षी के कारण शाम को रानी रोड से गुजरना आसान नहीं था, लेकिन अब पटावल लुप्तप्राय पक्षी में शामिल हो गई। उस समय पटावल तीन प्रजातियां पाई जाती थी। जंगली पक्षियों में गिद्ध, चील, शकरा, जंगली मुर्गा, हंजा, ढींच, घरट आदि पक्षी भी लुप्तप्राय हैं।

सर्वाधिक बाघ थे मेवाड़ में

संसार में सबसे ज्यादा बाघ भी मेवाड़ में पाए जाते थे, इसीलिये यहां का जंगल बाघदड़ा के नाम से जाना जाने लगा। इतिहास गवाह है कि अकेले महाराणा फतहसिंह ने एक हजार बाघों का शिकार किया। महाराणाओं द्वारा शिकार, उस समय वीरता का प्रतीक माना जाता था। लेकिन, एक और चीज ध्यान में रखी जाती थी जो यह है कि मादा बाघ या शावक का कभी शिकार नहीं किया जाता। बीसवीं सदी के पांचवें दशक में मेवाड़ में 5 हजार से भी अधिक बाघ थे। जिले के सज्जनगढ़, बाघदड़ा, जयसमंद एवं फुलवारी की नाल में सैंकड़ों बाघ पाए जाते थे। कहा जाता था कि मेवाड़ में जब पांच शावक जन्म लेते उनमें से तीन फुलवारी की नाल के होते थे। उदयपुर जिले में अंतिम बार 1967 में बाघ देखा गया था।

दैनिक भास्कर — 4-4-2003

References

- Burke W.S. 1928. The Indian Field Shikaar Book. Pub. Thacker Spink & Co. Calcutta & Simla, pp. 11-12.
- INTACH, 2016. *A monograph on national geoheritage monuments of india*. pp. 98-101 & 106-109.
- Ojha, G.H. 1928. *Udaipur Rajya Ka Itihas*. Part – II. Pub. Maharana Mewar Historical Publication Trust, Udaipur, pp. 1-64.
- Ojha S. 1886. '*Veer Vinod*', Part-I. Pub. Motilal Banarsidas. pp. 113-117.
- Tanwar, D.T.S. 1956. *Shikari aur shikar*. Pub. Jaipur printers. pp. 1-360.
- Tehsin, R.H. 1980. Occurrence of the Large Brown Flying Squirrel and Mouse Deer near Udaipur, Rajasthan. *J. Bombay nat. Hist. Soc.*, Vol. 77(3): 498.
- Tehsin, R.H. 1986. How wild dogs (*Cuon alpinus*) use their chemical weapon in hunting. *Tiger Paper*, Vol XIII (2): 23.
- Tehsin, R.H. 1987. The Wolf (*Canis lupus*) of Mewar region. *J. Bombay Nat. Hist. Soc*., Vol. 84(2): 422-424.
- Tehsin, R.H. 2004. Fauna of Mewar from Copper Age to Iron Age. *Cheetal*, Vol. 42 (1&2): 35 - 38.
- Tehsin, R., Durve, V.S. and Kulshreshtha, M. 1988. Occurrence of a Schizothoracine fish (Snow Trout) in a subterranean cave near Udaipur, Rajasthan. *J. Bombay Nat. Hist. Soc*., Vol. 85(1): 211-212.

Thank You

Email: dubeys1230@gmail.com

+91 7014920553 **+91 9352507157**

ResearchGate: https://www.researchgate.net/profile/Sunil-Dubey-3

Facebook: https://www.facebook.com/sunil.dubey.5203

Twitter: https://twitter.com/DubeyS123

LinkedIn: https://www.linkedin.com/in/sunil-dubey-9114805a/

YouTube: https://www.youtube.com/@sunildubey6959